दिनांक : - 04-07-2020

कॉलेज का नाम :- मारवाड़ी कॉलेज दरभंगा

लेखक का नाम :- डा० फ़ारूक आजम (अतिथी शिक्षक)

स्नातक :- प्रथम खंड (इतिहास)

विषय :- प्रतिष्ठा इतिहास

एकाई :- प्रथम

पत्र :- प्रथम

अध्याय :- मौर्योत्तरकाल स्त्रोत

प्रथम शक शासक मोगा या माउस था। उसकी राजधानी तक्षशिला थी। सिक्को के आधार पर उसका साम्राज्य पुष्कलावती, कपिशा तथा पूरब में मथुरा तक विस्तृत था।

मोउस के पश्चात एजेज तक्षशिला का शक शासक हुआ। उसने अंतिम ग्रीक शासक हेलियोक्लेस

Scanned with CamScanner

को भारत से खदेड़ दिया तथा अपोलडोटस द्वितीय तथा हिप्पास्ट्रेटस की मुद्राओं को पुनरंकित करवाया।

पश्चिमी भारत मे दो शक वंशों के अस्तित्व के प्रमाण मिलते है।

① महाराष्ट्र का क्षहरात वंश

② कार्दमक (चष्टन) वंश अथवा सुराष्ट्र तथा मालवा के शक क्षत्रप

क्षहरात वंश का पहला शासक भूमक था। उसके सिक्के गुजरात, काठियावाड़ तथा मालवा से प्राप्त होते है। सिक्को पर ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपियो मे लेख लिखे गये है।

कार्दमक (चष्टन वंश) :- इस वंश का पहला शासक चष्टन था जो यसमोतिक का पुत्र था। चष्टन संभवतः पहले कुषाणो की अधीनता मे सिंध क्षेत्र का क्षत्रप था बाद मे वह स्वतंत्र हो गया तथा महाक्षत्रप की उपाधि ली।

संभवतः उसके पुत्र जयदामन ने उज्जयिनी को जीत लिया परंतु चष्टन के जीवन काल में ही उसकी मृत्यु हो गई अतः उज्जैन का प्रथम स्व तंत्र शासक चष्टन ही था। माना जाता है कि मालवा के एक भारतीय शासक ने 58 ईसा पूर्व में एक शासक को पराजित किया तथा विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। इसी के उपलक्ष्य में उसने विक्रम संवत चलाया जो 57 ईसा पूर्व से शुरू होता है। तब से माना जाता है कि यह उपाधि शक्ति तथा प्रतिष्ठा का प्रतीक हो गई। अभी तक भारत में 14 विक्रमादित्य की उपाधि वाले शासक हुए हैं अंतिम विक्रमादित्य हेमू था।

चष्टन के पश्चात उसका पौत्र रुद्रदामन प्रथम

पश्चिमी भारत का शासक बना। जूनागढ़ (गिरनार) से शक संवत 72 (150) ई० का एक प्रशस्ति अभि लेख प्राप्त हुआ है जो संस्कृत का प्रथम लंबा अभि लेख है। इस अभिलेखानुसार उसने निम्नांकित स्थली पर विजय प्राप्त की - आकर - अवंति, अनूप, अपरान्त अनर्त तथा सुराष्ट्र, कुकुर, स्वभ्र, मरु, सिंधु तथा सौवीर निषाद।

इस अभिलेख के अनुसार उसने दक्षिण पथ के सातवाहन शासक वशिष्ठपुत्र पुलुमयी को दो बार पराजित किया।

रुद्रदामन दो अन्य कारणों से इतिहास में प्रसिद्ध है।

① उसने मौर्य शासक निर्मित सुदर्शन झील की मरम्मत करवाई तथा इसका खर्च व्यक्तिगत कोष से किया जो कि उसके राज्यपाल सुविशाख के नेतृत्व में सम्पन्न हुआ।

Scanned with CamScanner

(2) उसने संकृत का पहला बड़ा अभिलेख लिखवाया जूनागढ़ अभिलेख मे उसे भ्रष्ट राजा प्रतिष्ठापक कहा गया है।

पश्चिमी भारत का अंतिम शक शासक रुद्रसिंह तृतीय था जिसको गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने परास्त कर वहाँ से शक सत्ता का उन्मूलन कर दिया।

सिक्कों के आधारपर ज्ञात होता है कि मथुरा के शकों का पहला शासक हगान या हगामस था इस वंश का सबसे महत्तवपूर्ण शासक सोडास था जिसके पश्चात कुषाण शासक विम कड फिसस का मथुरा पर अधिकार हो गया।

पश्चिम:साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक मिथ्रदात प्रथम था (171-130) ईसा पूर्व इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक

Scanned with CamScanner

गोण्डोफर्निस था उससे देवव्रत की उपाधि ली थी
उसके सिक्के पंजाब, सिंध, कन्धार, सीस्तान
तथा काबुल घाटी में पाये गए है। शकों को परास्त
कर उसने तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया।
ईसाई अनुश्रुति में उसे समपूर्ण भारत का राजा
कहा गया है उसी के शासन काल में ईसाई धर्म
प्रचारक सेंट थॉमस भारत आया था।
पार्थियन शासकों के सिक्कों पर धर्मप्रिय (धार्मिक)
उपाधि उत्कीर्ण मिलती है।
संभवतः पार्थियनों का आर्थिक दशा अच्छी नहीं
थी क्योंकि उसके समय में बहुत कम चाँदी के सिक्के
प्राप्त होते है।
कुषाण
कुषाण चीन के यूची कबीले से संबद्ध थे। यू-ची
तोखरी के नाम से भी जाने जाते थे।

Scanned with CamScanner

यह कबीला पांच शाखाओ मे विभाजित था। ये उत्तरी मध्य एशिया मे निवास करते थे तथा चीन के पड़ोसी थे।

कुजाल कदफिसेस नामक कुषाण शासक ने यूची कबीला को संगठित किया। उसने कश्मीर तथा सिंधु नदी के पश्चिम का क्षेत्र जीता।

कुजुल के दो प्रकार के सिक्के मिलते है प्रथम प्रकार के सिक्को मुखभाग पर काबुल के अंतिम यवन शासक हर्मियस का नाम यूनानी लिपि मे तथा पृष्ठभाग पर खरोष्ठी लिपि मे कुजल का नाम खुदा है। इस प्रकार के सिक्को पर उसकी कोई उपाधि नही है। जबकि दूसरे प्रकार के सिक्को पर उसकी राजकीय उपाधिया जैसे महाराजा यवुगस, कुषाण, कुयुल उत्कीर्ण है।

Scanned with CamScanner